(4) हो जनजाति

हो जनजाति

- झारखंड की चौथी सर्वाधिक जनसंख्या (9.23 प्रतिशत)वाली जनजाति
- इनका सर्वाधिक संकेन्द्रण – कोल्हान प्रमंडल
- प्रजातीय समूह – प्रोटो ऑस्ट्रोलॉइड
  - हो जनजाति की शारीरिक बनावट बाकि जनजातियों से थोड़ा भिन्न है । इनकी त्वचा का रंग तांबई , बाल लम्बे , नाक चिपटी तथा कद मध्यम । सामान्यतः इनकी मूंछ–दाढी नही होती ।
  - हो जनजाति सच्चाई , इमानदारी , सहृदयता तथा सहायक प्रवृति के लिए जाने जाते है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

समाजिक व्यवस्था

- हो जनजाति मे 80 से भी अधिक गोत्र है ।

प्रमुख गोत्र – अंगारिया ,बरला ,बोदरा, बालमुचु , हेम्ब्रम , चान्पिया , हेमासुरीन , तामसोय

- हो जनजाति मे समगोत्रिय विवाह निषिद्ध है
- हो जनजाति का युवा गृह – गोतिओरा
- हो जनजाति का समाज पले मातृसतात्मक था मगर बाद मे पितृसतात्मक बन गया

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- इनके समाज मे ममेरा भाई या ममेरी बहन से विवाह को प्राथमिकता दी जाती है ।
- बहुविवाह की प्रथा सम्पन्न वर्ग तक ही सामित है ।
- बाल विवाह की प्रथा नही है ।
- सबसे प्रचलित विवाह – आदि विवाह (वर स्वयं किसी को लेकर वधु के घर जाता है ।)

❖ हो जनजाति मे अन्य महत्वपूर्ण विवाह के रूप

- दिक्कु आदि – हिन्दु प्रभाव या हिन्दु गांवो मे रहने वाले
- ओपोरतीपि – कन्या का हरण करके विवाह
- राजी खुशी – वर–कन्या की मर्जी सर्वोपरी
- आदेर आदि – वधु द्वारा विवाह होने तक वर के यहां बालाम श्रम
- घरजमाई का प्रचलन हो जनजाति मे नहीं है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

प्रमुख नामकरण

- गोनोंग या पान – वधू मूल्य
- मुण्डा – ग्राम प्रधान
- डाकुआ – मुण्डा का सहायक
- पीर/परहा – सात से 12 गांवो का समूह
- मानकी – परहा का प्रधान

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- पीर पंच – परहा का न्यायिक प्रधान

❖ हो जनजाति की पारंपरिक जातीय शासन प्रणाली मुण्डा–मानकी प्रशासन है जिसमे प्रजातंत्र की झलक देखने को मिलती है ।

❖हो जनजाति मे तलाक का प्रचलन है । तलाक के बाद बच्चे पिता के साथ रहते है । तलाक के बाद पूनर्विवाह भी समाज मे स्वीकृत है ।

अर्थव्यवस्था

➢ मुख्य पेशा – कृषि

➢ मजदूरी भी करते है ।

- बाड़ी भूमि/बेड़ो – घर के आस–पास की भूमि जिसमे मक्का , बीन व सब्जीयां उगाते है ।
- दोन / वादी भूमि – नीची भूमि मे धान की खेती
- टांड /गोड़ा भूमि – उंची भूमि मे मक्का , दाल की खेती

➢ हो जनजाति के लोग मडुआ , तिल , अरहर की भी खेती करते है ।

➢ इनका प्रमुख पेय – मद्यपान इनका प्रिय शोक है ।

➢ इस जनजाति का पवित्र पेय पदार्थ 'इली' कहा जाता है । जिसका प्रयोग देवी–देवताओं पर चढाने के लिए होता है ।

धर्म

➢ हो जनजाति के सर्वप्रमुख देवता – सिंगबोंगा

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

प्रमुख देवी–देवता

- ग्राम देवता – पाहुई बोंगा
- पृथ्वी देवता –आरी बोड़ोम
- पहाड़ देवता – मरांग बुरू
- नाग देवता – नागे देवता
- वर्षा देवता – देसाउली बोंगा
- पुरोहित – देउरी
- आदिग – पूर्वजो का पवित्र स्थान जो रसाई घर के एक हो कोने मे होता है ।

❖ हो जनजाति भूत–प्रेत तथा जादु–टोना पर विश्वसा करते है ।

❖शवों को जलाने तथा दफनाने दोनो की प्रथएं विद्यमान है ।

❖हो जनजाति की भाषा हो है जो ऑस्ट्रो–एशियाई भाषा परिवार की मुण्डा शाखा मे एक भाषा है ।

❖हो भाषा की लिपि बारड. चिति है , जिसका आविष्कार लोकोबोदरा ने किया है ।

❖प्रमुख पर्व मागे , बाहा , डमुरी , होरो , जोमनामा

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

(5) खरवार / खेरवार

❖ झारखंड की पांचवी सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति

➢ इनका मुख्य केन्द्र – पलामू । पलामू के अलावा हजारीबाग , चतरा , रांची , लोहरदगा , संथाल परगना तथा सिंहभूम

➢ खरवार जनजाति का सम्बंध द्रविड़ प्रजातीय समूह से है ।

➢ खेरीझार से आने के कारण इनका नाम खेरवार पड़ा ।

➢ खरवार जनजाति उन जनजातियो मे आते है जो खुद को उच्चहिन्दु (राजपुत) कहते है ।

➢ सम्पन्न खरवारों ने उच्च कुलों मे वैवाहिक सम्बंध स्थापित किए । इसलिए इनका रंग रूप छोटानागपुरी राजपुतों की भांति हो गया ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

समाजिक व्यवस्था

➢ खरवार जनजाति की 4 प्रमुख उपजातियों है ।

भोगता , माझी , राउत , माहतो

➢ भाषा खेरवारी – ऑस्ट्रीक भाषा परिवार

➢ खरवारों को इनकी भू–सम्पदा के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

❖ जो जमींदार खरवार होते है उन्हे राजपुत कहते है जबकि सामान्य खरवारों को भोगता , माझी आदि कहते हे ।

नोट :– ऐसा माना जाता है कि रामगढ राजपरिवार खरवार ही थे ।

❖ खरवारों मे युवागृह की व्यवस्था नही होती

❖बाल विवाह को श्रेष्ठ माना जाता है ।

❖वधुमुल्य की प्रथा है ।

❖बहुविवाह की भी प्रथा विद्यमान है ।

❖तलाक की प्रथा

❖विघवा पुनर्विवाह

↳ सगाई

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

➢ ग्राम पंचायत का प्रमुख – मुखिया/बैगा

➢ चार गांव की पंचायत –चट्टी

➢ पांच गांवो की पंचायत –पचौरा

➢ सात गांवो की पंचायत – सतौरा

➢ एक से अधिक पंचायतो से मिलकर बने पंचायत का प्रमुख प्रधान कहलाता है ।

धर्म

- सर्वप्रमुख देवता – सिंगबोंगा
- अन्य प्रमुख देवी देवता –मुचुकरानी (पछियारो) , दुआरपार , धरती माई , देवी , चंडी , दरहा , दक्षिणी
- हिन्दु प्रभाव के कारण खरवरों ने हिन्दु देवी देवताओ को भी अपनाया ।
- धार्मिक कार्यो के लिए ब्रह्माण , पुरोहितो की सेवा लेने लगे ।
- बली चढाने के लिए ये पाहन/बैगा की सहायता लेते है । बीमार पड़ने या संकट आने पर ये लोग 'ओझा' या 'मती' की सहायता भी लेते है।
- यह जनजाति सत्य के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने को तैयार रहते है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

खरवार जनजाति की अर्थव्यवस्था

- मुख्य पेशा – कृषि
- कुछ खरवार जमींदार है जबकि अधिक्तर रैयत है ।
- अत्यंत गरीब खरवार खेतिहार मजदूर
- कुछ खरवार कोयला खाद्यानों मे जबकि कुछ असम के चाय बगानो मे मजदूरी करते है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

(6) खड़िया जनजाति

❖पालकी (खडखड़िया) ढोने के कारण इस जनजाति का नाम खड़िया पड़ा

❖झारखंड मे सर्वाधिक संकेन्द्रण – रांची , सिंहभूम व हजारीबाग क्षेत्रो मे

❖झारखंड के अलावा ये उड़िसा , असम , मध्यप्रदेश व बंगाल मे भी पाए जाते है ।

❖प्रजातीय समूह – प्रोटोऑस्ट्रोलायड

खड़िया जनजाति के तीन वर्ग

1) पहाड़ी खड़िया –गुलु , भुइया , जारू , हेम्ब्रम

2) ढेलकी खड़िया – यरू, समद , हांसदा , टोपनों

3) दुध खड़िया – डुंगडुंग , कुलू , बिलुंग , सोनेर किरो

- युवा गृह – गोतिओं

❖खड़िया जनजाति के तीन वर्गो मे आपस मे विवाह नही होता । इसका समाज पितृसतात्मक तथा पितुवंशीय होता है ।

❖खड़िया समाज मे भी बहुविवाह प्रचलित है

➢ खड़िया जनजाति का सबसे प्रचलित विवाह – ओलोलदाय है जिसे असल विवाह भी कहते है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

विवाह का अन्य रूप

- उधरा–उधारी (सह पलायन विवाह)
- ढुकु चोलकी (अनाहुत विवाह)
- तापा (अपहरण विवाह)
- राजी खुशी (प्रेम विवाह)

✓ ग्राम प्रधान –प्रधान

✓ जातीय पंचायत –धीरा

✓ जातीय पंचायत प्रमुख – बंदिया

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

अर्थव्यवस्था

- पहाड़ी खड़िया – सबसे अधिक पिछड़ा
- दुध खड़िया – सबसे अधिक सम्पन्न
- ढेलकी खड़िया – कृषि कार्य को अपना लिए है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

नोट :– पहाड़ी खड़िया अभी भी आदिम तरीके से जीते है ।ये शहद , जड़ी–बुटी , कंद मूल , जंगली फल आदि इनके मुख्य आहार है ।

- दुध खड़िया एवं ढेलकी खड़िया कृषि करते है ।

धर्म

- प्रमुख देवता – बेला भगवान/ठाकुर

  इन्हे सूर्य का प्रतिरूप माना जाता है ।

- पारदुबो – पहाड़ देवता
- बोराम – वन देवता
- गुमी – सरना देवी

➢ खड़िया जनजाति के लोग अपनी भाषा मे भगवान को गिरिंग बेरी या धर्मराजा कहते है ।

➢ धार्मिक प्रधान – कालो/पाहन

➢ पहाड़ी खड़िया का धार्मिक प्रधान – दिहुरी

➢ ढेलकी तथा दुध खड़िया का धार्मिक प्रधान पाहन कहलाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888